

सत्गुर सेवन से बड़भागी

(सत्संदेश मार्च 1971 में प्रकाशित प्रवचन)

महापुरुषों की वाणी बड़ी नम्रता भरी होती है। गुरु साहिबों का वचन है, “हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता, सत्गुर कीरे हम थापे।” कि हमारी कोई कुछ हैसियत नहीं थी, मगर जब से सत्गुर मिले हैं, यह थापना (हैसियत) मिली। इंसान तो सब इंसान होते हैं, मगर इंसानों में सचमुच इंसान कोई-कोई होता है। इंसान किसको कहते हैं? इंसान वह है, जिसमें उन्स हो, मुहब्बत का पुतला हो, Love (प्रेम) मुजस्सम (संदेह) हो और वही radiation (किरणों) से सारे संसार को निहाल करता है। God is love (परमात्मा प्रेम है) अब गाड़ (प्रभु) को तो देखा नहीं, जिसमें वह manifest (प्रगट) है, वह love personified (प्रेम संदेह) है, उसको हम देख भी सकते हैं। ताकत है। ताकत बड़ी अच्छी चीज़ है, बड़ी ज़ोरदार चीज़ है मगर ताकत का अहसास (आभास) कहाँ हो सकता है? जब किसी पहलवान में मुजस्सम (संदेह) हो जाती है। उसको देखने से भी ताकत की कुछ feeling (अहसास) होती है।

तो परमात्मा है। उसके होने का सबूत पूर्ण पुरुष देते हैं, जब जब वे आते हैं। वो इस बात का इकरार करते हैं कि परमात्मा है और हमने देखा है, ये भी इकरार करते हैं। “नानक का पातशाह दिस्से जाहिरा।” गुरु नानक साहब से पूछा, परमात्मा है? कहते हैं, “है, नज़र आ रहा है।” क्राईस्ट से पूछा तो यही जवाब मिला, Behold the lord! (देखो प्रभु को, वह नज़र आ रहा है)। No reason (कोई तर्क नहीं)। देखो। ये सब उसी का बना हुआ है। कबीर साहब ने कहा, “कहे कबीर मेरी शंका नाठी सरब निरंजन डीठा” कि मेरे सब शक-शकूक मिट गये, क्योंकि हमने उसे देखा। यही और महापुरुष कहते रहे। वह परमात्मा कहाँ है? बात यह है कि वह कहाँ नहीं है? ये सारा इज़हार (अभिव्यक्ति) उसी का है। “एको कवाओ तिसते होए लख दरियाओ।” I am one, wish to be many (अर्थात् मैं एक से अनेक हो जाऊं)। जो God into expression power (व्यक्त प्रभु-सत्ता) है, ये सब उसी का इज़हार है। “एह विस संसार जो तू वेखदा हरि का रूप है, हरि रूप नदरी आया।”

ये हरि का रूप है। कहते हैं, और हमको नज़र भी आया। इकरार भी साथ है।

ग्रंथ-पोथियां सभी कहती हैं कि परमात्मा हर जगह मौजूद है। पर वो कहते हैं, हम को नज़र भी आया है। तो मानुष जन्म पाकर सबसे बड़ा आदर्श हमारे सामने जो है, वह प्रभु का अनुभव करना है। सारी ग्रंथ-पोथियां, वेद-शास्त्र पुकार-पुकार कर कहते हैं, परमात्मा, परमात्मा, हज़ारों नामों से याद करते हैं। क्या किसी ने ये भी कहा कि हमने देखा है? तो महापुरुष आकर लोगों को इस बात का यकीन दिलाते हैं कि परमात्मा है और witness (गवाही) देते हैं कि हमने देखा है। Son knows the Father and others whom the son reveals. उसका बच्चा उसको देखता है। बच्चे कौन हैं? ये अनुभवी पुरुष जिनमें वह प्रगट है, जो Word made flesh (शब्द सदेह) हैं। 'गुरु में आप समोये शब्द वरताया।'

वह (प्रभु) इंसानी जिस्म में इजहार करता है, manifest (प्रगट) होता है और प्रगट होकर लोगों को परमात्मा से जोड़ता है। "कोई जन हर स्थां देवे जोड़।" उसके आने से लोगों को यकीन होने लगता है कि परमात्मा है। नहीं तो सब शक में जा रहे हैं कि परमात्मा है कि नहीं? कौन कहता है? बात समझे? हर कोई ग्रंथ-पोथियां पढ़कर इस कोशिश में है कि किसी तरह वह मिले। उसके लिये कई साधन करते हैं, तरह-तरह के। कर-करा के आखिर, देखा है कि नहीं? सवाल तो यह है। एक बच्चा था। बाल हठ, त्रिया हठ, राज हठ बड़ा बुरा होता है। वो स्कूल गया। उस दिन फारसी पढ़ाई गई उसको यह अक्षर पढ़ाया गया कि 'आब बयार' पानी लाओ। घर आया, प्यास लगी उसको। हठीला था। कहने लग, आब बयार। अब घर वाले नहीं समझते थे फारसी। वह भी हठ का पक्का था। आब बयार, आब बयार करता तड़पता मर गया। पीछे मालूम हुआ पानी मांगता था।

भई हम सब परमात्मा का नाम लेते हैं। कोई कहता है, राम है रम रहा है। कोई कहता है परिपूर्ण है, कोई कहता है ज्योति स्वरूप है। वह हमादान (सर्वज्ञ) है, जगह-जगह है। कोई जगह नहीं जहां वह नहीं है। अरे भई किसी ने देखा भी है? देखा हो तो दिखाने की भी उम्मीद हो सकती है। तो ऐसे पुरुष दुनिया में प्रभु भेजता है। हरेक कौम को, हरेक मुल्क को, To guide the child humanity (प्रभु की सन्तान मनुष्य जाति के मार्ग दर्शन के लिए) To bring them to the Father (वापस पिता के घर पहुँचाने के लिये)। इंसान का उस्ताद इंसान। क्यों वह मानव में प्रगट होता है? क्योंकि इंसान का उस्ताद इंसान है। वह परमात्मा वक्तन फवक्तन (समय-समय) from time to time हमेशा, हरेक मुल्क में, ऐसे महापुरुष

भेजता रहता है। उसका काम सिवाय इसके कुछ नहीं कि भूली भटकी दुनिया को प्रभु से जोड़े। बस। उसका और कोई काम नहीं है, न social, न पोलिटिकल, न यह न वह। निरोल आध्यात्मिक काम प्रभु से जोड़ना। बाकी side issues (इधर-उधर के मामले) हैं। वह कहता है develop (उन्नति) करो (इस पहलू में भी)। इंसान जिस्म रखता है, बुद्धि रखता है, आत्मा रखता है। रखता नहीं, आत्मा खुद है। यह चेतन स्वरूप आत्मा है। बुद्धि रखता है, जिस्म रखता है। वह कहता है, जिस्मानी तौर से भी develop (उन्नति) करो, बुद्धि के लिहाज से भी करो और तीसरा पहलू जो इसका खुद चेतन स्वरूप है, उस को भी develop (विकास) करो। जिस्म को खुराक देता है, जिस्मानी पहलवान बन जाता है, बुद्धि को खुराक देने से, लिखने-पढ़ने-विचारने की, बुद्धि का पहलवान बन जाता है, नई से नई तफतीशें कर डालता है। आत्मा चेतन स्वरूप को क्या खुराक देता है? हाँ खुराक का ज़िक्र करता है। ग्रन्थों-पोथियों में ज़िक्र है कि परमात्मा परिपूर्ण है, हमा आलम (सर्वत्र) है, All-wisdom (सर्वज्ञ) है, All Light (प्रकाश पुंज) है। All life, All light, All love है—वह है कहाँ? सवाल तो यह है।

तो उसके अनेकों नाम रखे गये हैं, समझाने के लिए। महापुरुष आए, हरेक महापुरुष ने उसका नये से नया नाम थापा, समझाने बुझाने के लिए। तो हम सब नामों पर कुर्बान हैं। “बलिहार जाऊं जेते तेरे नाओं हैं।” कि हे प्रभु! जितने तेरे नाम रखे हैं, हम सब नामों पर कुरबान हैं। तो नामों का सवाल नहीं, नामी का सवाल है। राम, अल्लाह, वाहेगुरु, खुदा—सब नाम हैं। जिसके ये नाम हैं उसको पकड़ना चाहिये ना! तो मेरे अर्ज करने का मतलब है, महापुरुष आकर, जिसका हम नाम लेते हैं, सारी दुनिया जिसकी पूजा करती है अनेकों नामों से, वह (महापुरुष) दिखाते हैं। वो यह नहीं कहते कि परमात्मा ज्योति स्वरूप है। वो कहते हैं, यह ज्योति है, उसका इज़हार (व्यक्त स्वरूप) है और फिर यह बातते हैं वह कहाँ है। वो कहते हैं हर जगह है, कोई जगह खाली नहीं। मगर पहले शरीर रूपी मन्दिर में देखो। वो कहते हैं हमने देखा है। कहाँ देखा है? कहते हैं शरीर रूपी मन्दिर में देखा है। वो कहते हैं महाराज, देखा है तो हमें भी दिखाओ। हमें क्यों नहीं नज़र आता? उसका कारण? हमारे और उसके दरम्यान मन खड़ा है। मन के चार phases (पहलू) हैं, चित्त, मन, बुद्धि और अंहकार। कहते हैं, सारे ही जब तक स्थिर न हों, वह नज़र नहीं आता। एक आदमी कहता है हवा में कीड़े-मकौड़े भरे हुए हैं। हम कहते हैं, कैसे कहते हो भरे पड़े हैं? दिखाओं तो सहीं? देखे बगैर यकीन नहीं

आता और दूसरे, जो उनके पास आते हैं उनको भी यही कहता कि सुने-सुनाये पर न जाओ।

जब लग न देखूँ अपनी नैनी, तब लग न पतीजूँ गुर की बैनी ।

कि जब तक मैं अपनी आँखों से न देखूँ, गूरु के कहने पर भी विश्वास नहीं आता। बड़ी आजाद राय है। है तो दिखाओ। वो कहता है हवा में कीड़े-मकौड़े भरे पड़े हैं, हैं तो दिखाओ। वह क्या करता है? माईक्रोस्कोप (आला यन्त्र) है बना हुआ, इसका खासा (गुण) है, एक चीज़ को देखो उसमें तो सात गुण magnify (बड़ा) करके दिखाता है। जब देखो (उसमें से) तो कीड़े-मकौड़े भरे हुए नज़र आते हैं। पहले भी थे, मगर जब तक देखा नहीं था यकीन नहीं आता था। तो अनुभवी पुरुष कहते हैं, परमात्मा है। वह ज्योति स्वरूप है, घट-घट वासी, हमारा जीवनाधार है। यह शरीर हरि मन्दिर है जिसमें सच्चे की ज्योति जगमगा रही है। हम कहते हैं, हम आँखें बन्द करते हैं वह नज़र नहीं आता। जो देखता है वह दिखा भी सकता है। जो खुद नहीं देखता वह क्या दिखाएगा?

सन्त संग अन्तर प्रभ डीठा। नाम हरि का लागा मीठा ॥

सन्तों की संगति में उस प्रभु को हम देखने वाले बन जाते हैं, तो जितने हम उसके नाम लेते हैं, मीठे लगते हैं। याद रखो, सदा के सुहाग को पाने की पहली पौँड़ी क्या है? कि जब भी प्रभु का नाम लो मिठास आए। यह पहली पौँड़ी है। अब तो जबरदस्ती लेते हैं ना, रस नहीं आता है पर जिसको चखा हो, उसी का रस आएगा ना! जिसको सुना ही है, कभी चखा नहीं, “बिन देखे बिन अरस परस के नाम लिये क्या होय।” बगैर देखने के, बगैर उसमें लोट-पोट होने के, बगैर उसके हंडने (बरतने) के खाली अक्षरी नाम लेने से क्या होता है? आपने एक बार मीठा आम खाया, बड़ा मीठा आम, जब आम का नाम लोगे ना, किसी ज़बान में लो, आम कहो, मैंगो कहो, ज़बान में मिठास आने लगेगी। ये कब होगा? जब पहले कोई चखाने वाला मिले। जिसने चखा है वह चखाए। फिर राम कहो, अल्लाह कहो, वाहेगुरु कहो- सब मीठे लगेंगे।

तो सारी दुनिया ही उसको किसी न किसी नाम से याद कर रही है। ठीक है। कोई राम कहता है, कोई अल्लाह कहता है, कोई वाहेगुरु - और अनेकों नाम हैं - “राम राम सब कोय कहिये राम न होय।” राम-राम तो सब कोई कहता है, कोई

अल्लाह कोई वाहेगुरु, अनेकों नाम हैं, मगर खाली कहने से जो रम रहा है उसका contact (परिचय) नहीं होता। ये direction (संकेत) करता है, कोई चीज़ ऐसी है जो रमी हुई है। फिर आगे एक बात कहते हैं, “‘गुर परसादी राम मन वसे तो फल पावे कोय।’” अगर किसी अनुभवी पुरुष की कृपा से अन्तर में वह रमा हुआ नाम प्रकट हो जाए तो राम कहने का नशा आ जाए। तो आप देखेंगे कि परमात्मा है। सब ऋषियों-मुनियों-महात्माओं ने, जो आए, एक दो को छोड़ जिन्हें अनुभव नहीं हुआ होगा माफ करना, सब मैजारिटी (बहुमत) निनानवें फीसदी सब कहते हैं कोई ताकत है और नास्तिक लोग भी इकरार करते हैं, O mighty atom ! (हे अणु महान !) एक नास्तिक मरने लगा, उसका अन्त समय आ गया। उसने अपने मकान में लिखा हुआ था, God is nowhere (कि परमात्मा कहीं नहीं)। एक बच्चा दाखिल हुआ कमरे में, पढ़ने लगा, जी, ओ.डी. गाड, आई. एस.इज, एन. ओ. डब्ल्यू. नाऊ, एच.ई.आर.ई. हियर — गाड इज़ नाऊ हियर (अर्थात् परमात्मा अब यहां है।) मरने वाला कहता है, हां भई God is now here. यह कब अनुभव होता है ? जब अन्त समय आए। शरीर को छोड़ता है तो मालूम होता है शरीर को कोई पावर कन्ट्रोल कर रही है। यह अब (जीते-जी) शरीर को छोड़ ऊपर आओ, कन्ट्रोलिंग पावर का अहसास होता है।

एक देख कर गता है कि परमात्मा है। एक सुना-सुनाया, पढ़ा-पढ़ाया। देखने वाला तुमको डिमांस्ट्रेशन (अनुभव) देगा और उसी का नाम साधु, सन्त, महात्मा है या गुरु है। गुरु के माने (शब्दार्थ) हैं जो अन्धेरे में प्रकाश करे। ऐसा अनुभवी पुरुष ही right interpretation, जितनी धर्म पुस्तकें हैं उनके ठीक माने बता सकता है, नहीं तो कोई कुछ अर्थ करेगा कोई कुछ। पहले अद्वैत बना, फिर Qualified (सीमाबद्ध) अद्वैत बन गया। बात समझे हो ? मानुष जन्म पाकर सबसे बड़ा आदर्श प्रभु का पाना है। पैदा होता है तो ये इन्सान है। सबको (इंसानों को) एक जैसे हकूक (समान अधिकार) परमात्मा ने दिये हैं। एक ही तरह सब पैदा होते हैं, क्यों भई 9 महीने माता के पेट में रह कर आता है कि नहीं ? और उसे (इंसान को) वह बनाता ही नहीं उसमें आप भी बैठ जाता है। “जिस गृह तिस दिया ताला कुंजी गुर सौंपाई।” कुंजी गुरु को दे देता है। “जो वचन गुरु सत्-सत् करि माने तिस आगे काढ धरीजे।” उसको प्रकट कर देता है। “गुरु काढ तली दिखलाया।”

तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब, ऐसे महापुरुष हमेशा दुनिया में आते रहे, आगे भी

आए, अब भी हैं, आगे भी रहेंगे। आखिर उसी के बच्चे हैं, दुनिया में सब। नियम अटल है demand and supply (मांग और पूर्ति) का। जहाँ आग जलेगी वहाँ आक्सीजन मदद को आएगी। जब लोग बाहरमुखी हो कर तंग नज़री और तंगदिली में फ़स जाते हैं, अपने आपको भूल जाते हैं, उस वक्त कोई महापुरुष आकर revive (ताज़ा) करता है, होश में लाता है, कहता है, जागो ! awake "जागो-जागो सुत्तेयो चल्लेया बंजारा।" होश में आओ, क्या कर रहे हो ? मानुष जन्म का बहुत सा हिस्सा गुज़र चुका है, थोड़ा बाकी है, क्या आपने प्रभु को पाया ? जो महापुरुषों से मिले, इस राज़ (रहस्य) को हल कर गये, हकीकत (सत्य) को पा गये। अपना जीवन सफल कर गये। जब वो चले गये, उनकी तालीम को ताज़ा रखने के लिये स्कूल और कॉलेज (ये धर्म समाज) बने, जिनके हमने लेबल लगाए हैं। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, बौधी, जैनी पीछे बने हैं कि प्रभु ने मोहरे लगा के भेजा है ? तो जब तक अनुभवी पुरुष रहे, बहुत सारे लोग फायदा उठाते रहे। जब उनकी (अनुभवी पुरुषों की) कमी हो गई, धीरे-धीरे वही चीज़ (जो नेक मक्सद से बनी थी) उसमें गिरावट आ गई। The same good old custom corrupts itself. Formation (समाज) बड़े नेक मक्सद से बनाई जाती है। उसमें stagnation (रुकाव) आ जाती है जिससे deterioration (गिरावट) हो जाती है। फिर महापुरुष आकर जगाते हैं, अरे भाईयों, तुम भूल में जा रहे हो। We are all one as man (इंसान होने के नाते हम सब एक हैं)।

परमात्मा ने एक से हकूक (अधिकार) सबको दिये हैं। No high no low (कोई छोटा न बड़ा) बड़ी golden opportunity (सुनेहरी मौका) हरेक को दी है (मनुष्य जन्म की)। इसमें उसको पाले, नहीं तो चककर काटना पड़ेगा। इसीलिये सब महापुरुषों ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि It is thy turn to meet God (अर्थात् यही वक्त है मानुष जन्म का प्रभु को पाने के लिए)। "भई प्राप्त मानुख देह हुरिया, गोबिन्द मिलन की एह तेरी बरिया। अवर काज तेरे किते न काम, मिल साध संगत भज केवल नाम।" साधु की संगति करो। किसी Word made flesh (नाम सदेह है जो) से मिलो, जिसमें वह (प्रभु) manifest (प्रगट) है। वह तुमको demonstration (अनुभव) देगा। उसको दिनों-दिन बढ़ाओ। तो आज सुबह आपके सामने एक शब्द रखा गया। बड़े साधनों का ज़िक्र उसमें आया, जितने अपराविद्या के साधन हैं सबका ज़िक्र उसमें आया। उसमें कहा कि इन अपराविद्या के साधनों में ज़रा विवेक से काम लो। ये क्यों बनाए गए हैं ? तुम ज्योति जगाते हो,

क्यों जगाते हो ? घंटी बजाते जो, क्यों बजाते हो ? तब तो काम बन जाए । अगर खाली ज्योति जगाते रहो, घंटी बजाते रहो— थोड़ी एकाग्रता के लिए ठीक है, मगर हकीकत इसमें नहीं है । तो कोई भी काम आप करते हो, थोड़ा विवेक से काम लो, सत् और असत् का निर्णय करो, सत् को पाओ, असत् से फायदा उठाओ । तो आखिर इसी नतीजे पर पहुँचे थे कि विवेक के बगैर काम नहीं बनता । और जिसमें विवेक हो, सत् असत् का निर्णय किया हो, सत् को पाया हो, आपको सत् की थोड़ी पूँजी दे सकता हो, उसके पास जाओ । नाम उसका कोई रख लो । उसको गुरु कहते हैं, उसको साधु कहते हैं, उसको सन्त कहते हैं, उसको महापुरुष कहते हैं, उसको सत्पुरुष कहते हैं । पुरुष हम सब हैं । महापुरुष वह है जो awakened (जाग्रत) हो गया । सत्पुरुष, जो उसका रूप बन गया ।

हम सब पुरुष हैं । हम बड़े खुशकिस्मत हैं कि हमें मानुष जन्म मिला । ये हमारी golden opportunity (स्वर्णिम अवसर) है प्रभु को पाने का । तो परमात्मा को पाना है । दो किसम की विद्यायें हैं, एक अपराविद्या, एक पराविद्या । अपराविद्या की तारीफ की है वेद-शास्त्रों, ग्रंथो-पोथियों ने - जप का करना, तप, पूजा-पाठ, रस्म रिवाज, तीर्थ यात्रा, हवन-दान ग्रंथो-पोथियों का पढ़ना-पढ़ाना, गाना-बजाना ये सब अपराविद्या है । इनका ताल्लुक (संबंध) इंद्रियों से है या मन और बुद्धि से । ये नेक कर्म हैं नेक फल मिलेगा, मगर doership (कर्तापिने) का ख्याल रहेगा, “जब इह जाने में किछु करता, तब लग गर्भ जून में फिरता ।” जब यह जानता है कि मैं करने हार हूँ, आना-जाना बना रहेगा—नेक का फल नेक, बद (बुरे) का फल बद । भगवान कृष्ण जी ने इसलिये फरमाया, “नेक और बद कर्म जीव को बांधने के लिये एक समान हैं, जैसे सोने की बेड़ी और लोहे की बेड़ी ।” एक है पराविद्या । जब तक इसके अन्तर में ego है, मैं पना है, doership है, करनेहार होने का ख्याल है, तब तक नेक कर्म और बद कर्म दोनों बांधने के लिये हैं । नेक का फल नेक, बद का बद । और उसकी basic (मूलभूत) चीज़ क्या है ? Desire (कामना) । दसम गुरु साहब ने इसलिये कहा, “कामना-विहीन हो जाओ ।” भगवान बुद्ध ने भी यही कहा, Be desireless (कामना से रहित हो जाओ) । जिस पानी में कोई हिलोर न उठे उसमें शक्ल देख सकते हो कि नहीं ?

तो यह doership (मैं-पना) कैसे नाश हो ? जितने और साधन हैं उसमें मैं-पना नाश नहीं होता । जब तक मैं-पना न जाए, आना-जाना बना रहेगा । बात समझे

हो ? आज सुबह यह मज़मून बड़ा खोलकर आपके सामने रखा गया । अब यह मैं-पना कैसे जाए ? यह तब जाएगा जब यह देखेगा कि वह ताकत काम कर रही है, मैं नहीं कर रहा । I am a mere puppet in the hand of God. (मैं उस प्रभु के हाथ की कठपुतली हूँ) । “जैसे मैं आवे खसम की वाणी, तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो ।” और, “नानक दास बुलाया बोले ।” बात समझे हो ? उसका ईलाज क्या है ? कि यह देखने वाला बने कि वह (प्रभु) कर रहा है, मैं नहीं कर रहा । जब यह कहे, “मेरा किया किछु न होय, जो हरि भावे सो होय ।” उसका ईलाज (उपाय) है, पराविद्या, आत्म तत्व का बोध । “हौमे ममता शब्द जलाई, गुरुमुख, ज्योत निरन्तर पाई ।” हौमे (अहंकार) का नाश गुरु के शब्द द्वारा होता है । वह शब्द जो गुरु के द्वारा मिलता है । शब्द कई किसम के हैं । एक शब्द—वह परमात्मा अशब्द है, जब इजहार (अभिव्यक्ति) में आया तो इजहार में आई ताकत को शब्द कहते हैं । उसकी तारीफ की गयी है, “उत्पत परलै सबदे होवे, सबदे ही फिर ओपत होवै ।”

जिस ताकत के आधार पर उत्पत्ति और प्रलय होती है, फिर देबारा सृष्टि का आगाज (आरम्भ) होता है, उसको शब्द कहते हैं, God into expression power (व्यक्त प्रभु सत्ता) । वह कहां है ? “शबदे धरती शबदे आकाश, शबदो शबद भया प्रगास । सगली सृष्टि शबद के पीछे नानक शब्द घटोघट आछे ।” वह घट-घट में है । उसको नाम भी कहते हैं । “नौ निध अमृत प्रभ का नाम, देही में इसका बिसराम ।” मगर कब नज़र आता है ? “जब इंद्रियां दमन हो, मन खड़ा हो, बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार होता है ।” खुदशनासी (आत्मानुभव) खुदाशनासी (प्रभु अनुभव) का पहला कदम है । Self-knowledge precedes God-knowledge जब यह अपने आपको जान लेता है, इन्द्रियों से rise above कर जाता है (ऊपर आ जाता है) तो कहते हैं, Self-knowledge is God-knowledge (आत्मानुभव प्रभु अनुभव है) । तो Great is man (मानव महान है) We are all micro-Gods (छोटे परिमाण में हम सब परमात्मा हैं) । सिर्फ मन-इन्द्रियों के घाट पर जिस्म और जगत का रूप बन रहे हैं, अपने आपको भूल रहे हैं । मछली की तरह, पानी में रहते हुए पूछते हैं, पानी कहाँ है ? तो इस भूल से कौन निकाल सकता है ? जो निकला हुआ है, निकाले । जो खुद नहीं निकला, इस मन-बुद्धि के चक्कर में है, इंद्रियों के घाट पर है, वह इसको कैसे निकाल सकता है माफ़ करना । “कोई जन कड़े धू ।” खींचकर निकाले तो निकाले ।

मिसाल के तौर पर, समझने की बात है, एक गधा हो। उसके सिर पर बोझ लदा हो और कीचड़ में फंस रहा हो। वह निकल सकता है अपने आप? किसी को रहम आ जाए, पहले उसके बोझ को हल्का करे, फिर खींच कर निकाले। हमारे सिर पर जन्मों-जन्मों के कर्मों का बोझ लदा हुआ है। जब तक वह थोड़ा हल्का न हो, कोई हमारी सुरति को खींचकर ऊपर न लाए, उसको कैसे देख सकते हैं? साधु कहो, सन्त कहो, गुरु कहो— कहलाना बड़ी आसान बात है, बड़ी भारी जिम्मेदारी का काम है। रुह कांपती है। हमारी आत्मा मन-इन्द्रियों के घाट पर लगकर जिस्म और जगत का रूप बन रही है। इतना इसका रूप बन चुकी है, identify हो चुकी है कि यह अपने आप को भूल चुका है, अपने जीवनाधार (परमात्मा) को भूल चुका है। महापुरुष आते हैं, और भाइयों! शुक्रिया करो उस मालिक का जिसने तुम्हें बनाया है, पैदा किया है। मानुष जन्म पाकर ही तुम उसको पा सकते हो। It is thy turn to meet God. अगर तुम silence of the heart (मन को स्थिर, चुप करके) rise above (देह से, मन-इन्द्रियों से ऊपर आ जाओ) कर जाओ, काम बन जाए। तो यह आज सुबह का मज़मून था, मैंने थोड़ा revise कर दिया (दोहरा दिया) है। अब अगर ऐसा पुरुष मिल जाए, कौन पहुंच सकता है उसको? क्राईस्ट ने साईमन से पूछा था, You know who I am? क्या तुम जानते हो मैं कौन हूँ? किसी ने कहा तू बढ़ई का लड़का है, फलाने का, तू फलानी जगह का रहने वाला है। एक ने कहा, You are the son of the living God. तुम जीते-जागते प्रभु के बच्चे हो। कहने लगे, किसी अकल ने तुमसे ये बात नहीं कहलाई, मेरे पिता ने तुम्हारे अन्तर में बैठ कर तुमसे ये बात कहलाई है।

तो आँख के खुलने का सवाल है। वही महात्मा हमें कुराहिया (पथग्रष्ट) मालूम होता है, वही खुदा मालूम होता है। जिनकी आँख नहीं खुली उनके लिये वह कुराहिया है और ऐसे पुरुषों ने ही महापुरुषों को तकलीफ दी है। देख लो। आप को पता है क्राईस्ट को कांटों का ताज पहनाया गया? जिनकी आँख नहीं खुली थी, गुरु नानक साहब को कसूर शहर में दाखिल नहीं होने दिया कि यह लोगों की अकलें बिगड़ता है। पल्टू साहब को जिन्दा जला दिया गया, गुरु अर्जन साहब को तत्ते तवां पर बिठा दिया गया। शम्स तबरेज़ की खाल उतारी गयी, मंसूर को सूली चढ़ाया—और पीछे, जहां वो रहते हैं (महापुरुष) उस जगह को पूजते हैं। “जीते पितर न माने कोहू मोयां पूजे।” बात समझे? आज सुबह सारे अपराविद्या के साधनों का बड़ी detail के साथ (सुविस्तार) बड़े विवेक के साथ निर्णय किया गया

था, उस प्रभु से मिलना अभी दूर है। नेक कर्म हैं (अपराविद्या के साधन) नेक फल मिलेगा, आना-जाना बना रहेगा, जब तक तुम देखने वाले नहीं बनते। फिर उसका आखरी जवाब मिला था, “हर कीरत साध संगत है सिर कर्मन के कर्मा।” हरि का कीर्तन कौन-सा? जो साधु के संग के गाया जाए। बाहर का कीर्तन तो रागी ही गाता है। वह पहला कदम है अपराविद्या का। ठीक है। वह कीर्तन (जो साधु के संग में गाया जाए) कहां से मिलता है?

पंजे तत उलंघेयां पंज शब्द वज्जी वाधाई ॥

पांच तत्वों से ऊपर आओ तो उस Music of the Spheres (अर्थात् शब्द) का Contact (मेल) हो। साधु का संग, “सिर कर्मन के कर्मा,” सारे जो कर्म हैं उनका सिर कर्म (श्रेष्ठ कर्म) है। “कहो नानक तिस भयो प्राप्त जिस पूरब जन्म का लहना।” किसको ये अखण्ड कीर्तन मिलता है? जिसको प्रभु दया करे। “धुर कर्म पाया तुध जिन को से नाम हर के लागे।। कहो नानक तहं सुख होवा तित घर अनहद वाजे।।” यह मज़मून था आज सुबह का। अब ऐसा पुरुष अगर मिल जाए तो हमें क्या करना चाहिये? अब एक शब्द आपके सामने रखा जाता है। समझने जी बात है, फिर मैं सुबह वाली बात कहूँ, वही भगवान् कृष्ण वाली। अर्जुन को सारा उपदेश गीता का दिया तो कहने लगे, अर्जुन तूने सुना? भ्रान्ति कितनी दूर हुई? Misconception (गलतफहमी) कितनी दूर हुई? सुमति कितनी मिली? सुमति मिली तो फिर सत् को पाना भी तो है। वह (सत्) तुम्हारे अन्तर में है। जिसने पाया है उसको सत्यरूप कहते हैं। वह सतपुरुष है। अगर ऐसा पुरुष जो Word made flesh (शब्द सदेह) है, मिल जाए, क्राईस्ट ने क्या फर्माया था Eat me and drink me. (मुझे खाओ, मुझे पियो)। लोगों को ये बात भूल गई थी वह क्या है? He was Word made flesh and dwelt among us. (वो शब्द सदेह था जो इंसानों के बीच आ कर रहा)। He was Bread of life and Water of life. (वह जीवन की रोटी और जीवन का पानी था) बात समझे? अगर ऐसा महात्मा मिल जाए फिर हमें क्या करना होगा? एक शब्द आपके सामने रखा जाएगा। फिर ये प्रोफेसर साहब आए हैं (प्रोफेसर वसिष्ठ जसराई साहब) सोने को कुन्दन बनायेंगे। आप भाई दूर-दूर से आए हो। मेरे दिल में आपका बड़ा प्यार और बड़ा सम्मान है। मेरे लिये नहीं भाई। ये उसकी (गुरु की) शान है जिसने कुछ थोड़ा बनाया है। हम सच को सुनने के लिये आए हैं। जो मैं कह रहा हूँ, जो आ रहा है मैं कह रहा हूँ। पूँजी के level

(स्तर) से नहीं कह रहा। वो ताकत कहीं जाती नहीं, हर वक्त साथ रहती है। जी।

सत्युर सेवन से बड़भागी ॥ अनदिन साच नाम लिव लागी ॥

गुरु अमरदास का शब्द है। फरमाते हैं, जो सत्यगुरु के सेवने वाले हैं वो बड़े भागों वाले हैं। सत्यगुरु किसको कहते हैं? मैंने अभी अर्ज़ किया था, “सत्पुरुष जिन जाणेया सत्यगुरु तिन का नाओं। तिसके संग सिख उद्धरे नानक हरि गुण गाओ॥” जिसने सत्पुरुष सत्तनाम को जान लिया उसका नाम सत्यगुरु। ऐसे ही की सोहबत में सिख का उद्धार हो सकता है। क्यों? “सत्यगुरु देखिया दीखया लीनी, गतमित पाई अन्तर्गत चीन्ही॥” उससे दीक्षित होता है। दीक्षा किसको कहते हैं? जो दबी हुई चीज़ है उसको इज़हार (प्रगट) करके दिखाए। समझे? फिर कहा, “सत्यगुर सत्स्वरूप है॥” उसकी आत्मा मन-इंद्रियों से आजाद होकर उसका (प्रभु का) mouthpiece (मुख) बन गयी है। तो ऐसा महापुरुष, जागता पुरुष, अगर मिल जाए, आज सुबह जागने का लफ्ज़ था, “हमा आलम खुफता तो हम खुफता। खुफता रा खुफना कं कुनद बेदार॥” सारा जहान सो रहा है, अरे उसके साथ तू भी सो रहा है। सोये हुए को सोया हुआ कैसे जगा सकता है? आलम है, फाज़ल (विद्वान) है, ग्रन्थाकार है या कुछ भी है, वह मन-इंद्रियों के घाट पर सो रहा है, मोह-माया में फंस रहा है। यह भ्रम से कैसे निकल सकता है? कोई निकला हुआ निकाले तो निकले। तो कहते हैं ऐसा सत्स्वरूप महापुरुष अगर मिल जाए—मगर ऐसे का मिलना कैसे हो सकता है? कहते हैं, जब मालिक दया करे। “कर्म होए सत्यगुरु मिलाए॥” मालिक दया करे तब ऐसी हस्ती का मिलाप हो सकता है।

वो मालिक कहाँ है? हमारे घट-घट में है। वो देखता है बच्चा क्या मुझसे मांग रहा है? हम प्रभु को याद करते हैं दुनिया की चीज़े पाने के लिये या परलोक का सुख पाने के लिए। कितने लोग हैं जो प्रभु को पाने के लिये याद करते हैं? वो जब देखता है यह बच्चा मेरे बगैर रह नहीं सकता तो सामान करेगा। और क्या करेगा? जिसमें वो प्रगट है उसको मिला देगा, जिस pole (मानव देह) पर वो manifest (प्रगट) है, उसको मिला देगा। आंख बंद जिसकी है, वह आंख खुली वाले को कैसे पकड़ सकता है? सिर्फ requirement (ज़रूरत) उसके लिये किस बात की है? उसमें कपट न हो—कपट से मुराद (मतलब), दिल में कुछ और हो, जबान पर और हो और फिर चतुराई की बातें बनाकर फिर छिपाता न हो। सेवा-बंदगी का भाव हो, और नम्रता हो तो, “आप मिलिया गुर आई॥” आप मिलता है आकर। Guru

appears when the chela is ready. तो कहते हैं वो क्या करता है ? “सत्युर सेवया से बड़भागी ।” बड़े भागों वाले हैं वह । आपको मानुष जन्म मिला, बड़े भाग्यशाली हैं, मगर और बड़े भागों वाले कौन हैं ? जो अन्तर में प्रभु से जुड़ गये, जो मानुष जन्म का आदर्श है । जिसके अन्तर में प्रगट है वही जोड़ेगा ना ! जो आप सोया पड़ा है माया-मोह में, दूसरे को, सोये को, कैसे जगा सकता है ? तो कहते हैं, वो बड़े भागों वाले हैं जो सत्युरु को सेवने वाले हैं । सत्युरु का सेवना किसको कहते हैं ? सवाल तो यह है । राम-राम करने और मत्थे टेकने का नाम सेवना नहीं । जो उसको हर वक्त हाज़र-नाज़र समझता है, उसके रोब (भय) में रहता है कि पावर (प्रभु-सत्ता) तुम को देख रही है, कोई बुरा काम कर सकता है ?

सेवना ये है—पहला कदम, हुक्म की बजावरी । “सत्युर वचन, वचन है सत्युरु ।” जो वचन कहता है वही सत्युरु है । जो वचनों पर मत्था टेकता है उसकी अवश्य कल्याण है । इसलिये सारे महापुरुषों ने कहा, If you love me keep my commandments. (यदि मुझसे प्रेम करते हो तो मेरा कहना मनो) । जो हुक्म को मानते नहीं उन की कल्याण अभी दूर है । वह (सत्युरु) क्या कहता है ? नेक-पाक बनो, सदाचारी बनो । सबके अन्तर में परमात्मा है, किसी का हक न मारो, खून न निचोड़ो । इंसान-इंसान के काम आए । इंसान वही है जो दूसरों के काम आए । प्रभु से प्यार करते हो, प्रभु की अंस सब में हैं । We are all brothers and sisters in God (प्रभु की संतान होने के नाते हम सब आपस में बहन-भाई हैं) । और सबका वही पूज्य है जिसको हम सब पूज रहे हैं । तो क्राईस्ट ने इसलिये कहा, जो कहते हैं हम प्रभु को प्यार करते हैं और (अपने भाई को) जिसको वो देखते हैं उसको प्यार नहीं करते, कहते हैं, He is a liar (वह झूठा है) । जो यह कहते हैं हम किसी अनुभवी महापुरुष से प्यार करने वाले हैं, गुरु के पास जाने वाले हैं और एक दूसरे से नफरत करते हैं, They are liars (वो झूठे हैं) । ज़बान मीठी नम्रता भरी सब बीमारियों की दवा है । बात समझे हो ? तो बड़े भागों वाले हैं जिन को मानुष जन्म मिला । मगर और बड़े भागों वाले कौन हैं ? जो सत्युरु को सेवने वाले बने । सत्युरु मिला भी, उसके सेवने वाले नहीं बने तो पूरा फायदा नहीं मिला । “बीस-बिसवे सत्युरु का मन माने, तो परमेश्वर की गत जाने ।” सोलह आने जो उसका कहना मानता है, वह प्रभु की गति को जान जाता है ।

पहले मैंने अर्ज़ किया था सुबह, What is God ? (परमात्मा क्या हैं ?) Man minus desire. (वो इंसान जिसमें कोई ख्वाहिश न हो) | And what is man ? (और इंसान क्या है ?) God plus desires (परमात्मा जमा इच्छायें) और क्या कहाँगे ? So be desireless. (इसीलिये कामना विहीन हो जाओ) | Silence of heart में जाओ (मन को स्थिर करो) The very silence will sprout forth into love. The silence will become vocal. (चुप की जमीन बनेगी तो ज्योति का विकास होगा, वह मौन मुखरित होगा, उसमें ध्वनि गूंज उठेगी) | अब्बल तो ऐसे सत्गुरु का मिलना बड़े भागों से है। किन को मिलता है ? वो मैंने पहले अर्ज़ किया, मिल भी जाए, जब तक उसका सेवने वाला नहीं बनता तब तक काम नहीं बनता। बहुत से लोग मिलते हैं, मगर सेवने वाला, कोई 5 फीसदी, कोई 10 फीसदी, कोई 50 फीसदी— पर सौ फीसदी मानने वाला कहीं-कहीं मिलेगा।

तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं। ये किसकी वाणी है ? गुरु अमर दास साहब की, जिनको 70-72 साल की तलाश के बाद ये चीज़ मिली, गुरु नसीब हुआ, गुरु अंगद साहब के चरणों में आए, उन्होंने सब पर्दा जो था झूट का, वो खोल दिया, सामने आ गया सच। कहते हैं उससे क्या मिलता है ? अब निशानी आगे देते हैं। “सत्गुर सेवन से वडभागी, अनदिन साच नाम लिव लागी।” अनदिन कहते हैं चौबीस घंटे सचे के साथ लिव लग गयी। “नानक साचे को सच जाए।” वो क्या है ? वो आदि सच, जुगादि सच, है भी सच, नानक होसी भी सच।।। वह ever-existent है। सच, नाम और शब्द एक ही मानों में बरता गया है। नाम किसको कहते हैं ? नाम भी दो किसम के हो गये ना ! एक सचमुच नाम, एक उसके नाम। नाम कितने हैं ? एक। “जप मन मेरे तू एको नाम।” नाम पावर एक है। वो परमात्मा अनाम है। जब इजहार में आया है (व्यक्त हुआ) into expression उसको नाम कहते हैं। “नाम के धारे खण्ड-ब्रह्मण्ड।” और कहते हैं। “नामे ही ते सब जग होवा, बिन सत्गुर नाम न जापे।।।” उसका अनुभव बगैर सत्गुर के होता नहीं। “नानक नावें के सब किछ वस है पूरे भाग को पाय।” वो कण्ट्रोलिंग पॉवर है। हमको भी जिसम में कायम रख रही है, सारे संसार को अपने हुक्म में चला रही है। उसके अनेकों नाम रखे गये समझाने बुझाने के लिए। “बलिहार जाऊं जेते तेरे नाओं हैं।।।” मगर वो नाम पॉवर एक है, उसको नाम कहते हैं, उसको शब्द कहते हैं, उसको Word कहते हैं, उसको कलमा कहते हैं, जिससे चौदह तबक बने हैं, जिससे चौदह भुवन बने हैं, सारी सृष्टि creation उससे हस्ती (अस्तित्व) में आई। वो सच्चा नाम

है ना जिसके ये नाम हैं। उसके साथ वह (अनुभवी पुरुष) जोड़ता है। “कोई जन हरि स्यों देवे जोड़।” जो आप ही नहीं जुड़ा, तुमको कैसे जोड़ेगा। ये लफज़ बयान किये ? जब 70-72 साल की तलाश के बाद गुरु अंगद साहब के चरणों में आए ? “बहु विध थाका कर्म कमाय, सत्तुरु मिलिया सहज सुभाय ॥” कहते हैं मैं थक गया था कर्म कर-कर के। उन्होंने कृपा की, सहज ही मैं मिल गये।

अब कहते हैं (गुरु अमर दास साहब) सत्तुरु के सेवने वाले बड़े भागों वाले हैं। हमको सत्तुरु मिल जाए और सेवने वाले न बनें तो ? चाहिये ना, जो चीज़ अलौकिक मिली है उसकी कमाई करो। That is the bread of life. (वो ज़िन्दगी की रोटी है)। हम जिस्म को रोटी देते हैं, जिस्मानी पहलवान बनते हैं। बुद्धि को रोटी देते हैं, बुद्धि के पहलवान बनते हैं और आत्मा की खुराक ? वो देता है, हम लेते नहीं। वो हमारे अन्तर में ही है। वो घट-घट रखेया है। तो सत्तुरु मिले तो हमें क्या करना चाहिए ? लेते बड़ी खुशी से हैं माफ़ करना, कहना नहीं मानते। ये उपदेश किनको दिया जा रहा है ? “महापुरुष साखी बोल दे साँझी सकल जहाने ॥” To all mankind alike (सब मनुष्य जाति को) इन्सान को, आत्मा देहधारी को उपदेश दे रहे हैं। वो देखते हैं, आत्मा प्रभु से बिछुड़ी हुई है ये अपने घर जाए, समझे ? वो लेबलों के लिहाज से नहीं देखते, किस समाज का लेबल आपने लगाया हुआ है। वो क्या बयान करते हैं ? जो कुछ उन्होंने अपनी आंखों से देखा। “सुन सन्तन की साची साखी, सो बोले जो पेखें आखी।” पहला काम उनका क्या है ? “सत्तुर ऐसा जानिये जो सबसे लये मिलाय जियो।” To bring all children of God on one common platform उनका काम है प्रभु से बिछुड़ी हुई रूहों को वापस मिलाने का। बस। इसका नाम है रुहानियत, इसका नाम है Spirituality. जी।

सदा सुखदाता रवेया घट अन्तर, शब्द सच्चे उमाहा है ॥

कहते हैं वो परमात्मा जो है, घट-घट में है। “नौ निध अमृत प्रभ का नाम। देही में इसका बिसराम।” वह सच्चा शब्द है, सच्चा नाम है। एक अक्षरी नाम है। “शबदे धरती शबदे आकाश। शबदो शबद भया प्रगास। सगली सृष्ट शब्द के पाछे। नानक शब्द घटोघट आछे।” वो सच्चा शब्द है। जो उसके साथ लग जाते हैं, उस नशे में Overflow करते हैं। बसन्त ऋतु है ना आजकल। बसन्त में सब फूल फल खिल आते हैं। कितनी बहार होती है ! जिसकी आत्मा उस प्रभु से लगे वो खिलेगी कि नहीं ? ये मन मौल जाता है। “सत्तुरु मिलिये मन मौलिया।” बशाशत आती

है। जिस तरह फूल खिल जाते हैं जब बसन्त ऋतु आती है। किसी अनुभवी पुरुष का मिलना बसन्त ऋतु का आना है याद रखो। जो दवा उसने दी उसको बरतेगा वो हमेशा प्रफुल्लित रहेगा, ठण्डा होगा, शान्ति होगा, प्यार होगा। जी।

नदर करे तां गुरु मिलाए, हर का नाम मन बसाये ॥

अब अपनी ज़िन्दगी का थोड़ा इशारा है कि सारी उम्र तलाश करते रहे। एक जगह कहा, “भूले मन काहे रोस करीजे।” अब रोस क्या है? सत्युरु आखिर मिल तो गए ना! 70-72 साल न सही, शुक्र करो। तो कहते हैं जिसको मालिक दया करे। “नदर करे तां गुरु मिलाए।” ऐसा गुरु-गुरु तो दुनिया भरी पड़ी है गुरुओं से। बट्टा उठाओ तो गुरु मिलता है। दुनिया खाली नहीं। कमयाब (दुर्लभ) रहे। और आगे भी कमयाब रहेंगे। मिलता किसको है? जिसको वह मालिक दया करे। आगे कहते हैं, “हर का नाम मन बसाए।” वह हरि नाम जो है। “हर हर उत्तर नाम है जिन सिरजेया सब कोय।” हरि नाम वह है जो ताकत सारे जहान को बनाने वाली है, उस को अन्तर में प्रगट कर देता है। है तो सही, अब भी प्रगट कर देता है। “गुर काढ तली दिखलाया।” ‘इवम् ब्रह्म’ (अर्थात् ये ब्रह्म हैं, पकड़ ले) करके दे देता है। ये नहीं कि करे जाओ, हो जाएगा। ज्यादातर गुरु आपको मिलते हैं जो अपराविद्या के साधन बता देते हैं थोड़ा बहुत। ठीक है। नेक कर्म हैं, नेक फल मिलेगा। आना-जाना बना रहेगा। “बिन भागां ऐसा सत्युरु ना मिले।” जी।

हर मन वसेया सदा सुखदाता, शब्दे मन उमाहा हे ॥

मन उस लज्जत को पाकर हमेशा के लिये तृप्त हो जाता है। “नाम मिलिये मन तृप्तिये।” उस नाम में दो phases (पहलू) हैं, एक Light (ज्योति) एक Sound (नाद या श्रुति)। “नाम जपत कोटि सूर उजियारा।” और, “राम नाम कीर्तन रत्नवत हर साधू पास रखीजे।” अखण्ड कीर्तन, सतत कीर्तन जिसे गीता ने कहा। Music of the Spheres (मण्डलों का राग) कहा। उस महान लज्जत को पाकर छोटी लज्जतों को मन छोड़ देता है। “बिखै बन फीका त्याग री सखिये नाम महारस पियो।” विषय विकारों का बन ऐ सखी फीका है, नाम में महारस है, उसको पी। क्यों? कहते हैं, This is the Bread of life (ये ज़िन्दगी की रोटी है)। “बिन रस चाखे बुड़ गयी सगली सुखी न होवत जीयो।” जब तक नाम की महान लज्जत को नहीं पाता, जीवन बरबाद हो जाता है, जीवन का फायदा नहीं उठाता। फिर

ह। जिस तरह फूल खिल जात ह जब बसन्त ऋतु आता ह। किसी अनुभवों पुरुष का मिलना बसन्त ऋतु का आना है याद रखो। जो दवा उसने दी उसको बरतेगा वो हमेशा प्रफुल्लित रहेगा, ठण्डा होगा, शान्ति होगा, प्यार होगा। जी।

नदर करे तां गुरु मिलाए, हर का नाम मन बसाये ॥

अब अपनी ज़िन्दगी का थोड़ा इशारा है कि सारी उम्र तलाश करते रहे। एक जगह कहा, “भूले मन काहे रोस करीजे।” अब रोस क्या है? सत्युरु आखिर मिल तो गए ना! 70-72 साल न सही, शुक्र करो। तो कहते हैं जिसको मालिक दया करे। “नदर करे तां गुरु मिलाए।” ऐसा गुरु-गुरु तो दुनिया भरी पड़ी है गुरुओं से। बट्टा उठाओ तो गुरु मिलता है। दुनिया खाली नहीं। कमयाब (दुर्लभ) रहे। और आगे भी कमयाब रहेंगे। मिलता किसको है? जिसको वह मालिक दया करे। आगे कहते हैं, “हर का नाम मन बसाए।” वह हरि नाम जो है। “हर हर उत्तर नाम है जिन सिरजेया सब कोय।” हरि नाम वह है जो ताकत सारे जहान को बनाने वाली है, उस को अन्तर में प्रगट कर देता है। है तो सही, अब भी प्रगट कर देता है। “गुर काढ तली दिखलाया।” ‘इवम् ब्रह्म’ (अर्थात् ये ब्रह्म है, पकड़ ले) करके दे देता है। ये नहीं कि करे जाओ, हो जाएगा। ज्यादातर गुरु आपको मिलते हैं जो अपराविद्या के साधन बता देते हैं थोड़ा बहुत। ठीक है। नेक कर्म हैं, नेक फल मिलेगा। आना-जाना बना रहेगा। “बिन भागां ऐसा सत्युरु ना मिले।” जी।

हर मन वसेया सदा सुखदाता, शब्दे मन उमाहा हे ॥

मन उस लज्जत को पाकर हमेशा के लिये तृप्त हो जाता है। “नाम मिलिये मन तृप्तिये।” उस नाम में दो phases (पहलू) हैं, एक Light (ज्योति) एक Sound (नाद या श्रुति)। “नाम जपत कोटि सूर उजियारा।” और, “राम नाम कीर्तन रत्नवत हर साधू पास रखीजे।” अखण्ड कीर्तन, सतत कीर्तन जिसे गीता ने कहा। Music of the Spheres (मण्डलों का राग) कहा। उस महान लज्जत को पाकर छोटी लज्जतों को मन छोड़ देता है। “बिखै बन फीका त्याग री सखिये नाम महारस पियो।” विषय विकारों का बन ऐसखी फीका है, नाम में महारस है, उसको पी। क्यों? कहते हैं, This is the Bread of life (ये ज़िन्दगी की रोटी है)। “बिन रस चाखे बुड़ गयी सगली सुखी न होवत जीयो।” जब तक नाम की महान लज्जत को नहीं पाता, जीवन बरबाद हो जाता है, जीवन का फायदा नहीं उठाता। फिर

कहते हैं, वो कैसे मिले ? कहते हैं, “मान महत सकत नहीं काही, साधां दासी थीयो ।” कि मान से, महतता से, बाजू के बल, हकूमत के बल, बुद्धि के बल, रूपये के बल से नहीं मिलता । साधु का दास होने से मिलता है । उसकी पूँजी, रत्नों जैसी, प्रभु ने साधु के पास रखी है । और साधु कौन ? Manifested God in man (मानव में प्रगट प्रभु-सत्ता), Word made flesh (नाम सदेह), उसके साथ हमेशा ही सुखी रहेगा और प्रफुल्लित रहेगा । “कृपा करे ताँ मेल मिलाए, हौमे ममता शब्द जलाए ।”

गुरबाणी में एक जगह आता है “गुरु दयाल तां सदा बसन्त ।” हमेशा प्रफुल्लित रहने वाली चीज़ मिलती है । जैसे फूल रोज़ खिलते हैं ना ! ऐसे ही आत्मा को खुराक मिलती है । कहते हैं अगर प्रभु कृपा करे, ऐसे का मेल मिला दे तो हौमे, ममता का नाश हो जाता है । “हौमे ममता शब्द जलाई, गुरमुख जीत निरन्तर पाई ।” ये गुरमुख होकर चीज़ मिलती है । दो किसम की विद्यायें हैं फिर मैं अर्ज़ करूँ । एक मन-इन्द्रियों के घाट की भक्ति है, एक गुरु-द्वार की भक्ति है और सब ग्रन्थों-पोथियों, वेदों-शास्त्रों में इस बात पर ज़ोर दिया है कि, “गुर बचनी हर नाम उच्चरो ।” कि गुरु के वचनों द्वारा नाम का उच्चारण करो । क्यों ? इसमें बड़ा भारी फर्क है । जितने अपराविद्या के साधन हैं, ये सब मन, इन्द्रियों और बुद्धि के घाट के साधन हैं । इस में मैं पना नहीं जाता । नेक कर्म हैं, ठीक है । और गुरमुख भक्ति की तारीफ (परिभाषा) की है दो तरह से । “गुरमुख भक्त जित सहज धुन उपजे ।” जिसमें सहज की ध्वनि, Music of the Spheres (मण्डलों का राग) सुनाई देता है । फिर तारीफ की है, “गुरमुख भक्ति करो सद प्राणी ।” हे प्राणियों ! तुम हमेशा गुरमुख भक्ति करो । कहते हैं, कोई निशानी उस की भाई साहब ? कहते हैं, “हृदय प्रगास होवे लिव लागै ।” अन्तर में प्रकाश हो जाता है । चीज़ खड़ी हो तो लिव लगे ना ! किसके साथ लिव लगे ? “गुरमत हर हर नाम खुमारी ।” वह गुरमत की मोहताज है । वह तुम को हरि में समा देगी । Light and Sound is the way back to Absolute God (ज्योति और श्रुति प्रभु के धाम में वापस जाने का रास्ता है) । This is called mysticism इसका नाम है रुहानियत । इस का नाम है सुरति शब्द योग जो कुदरती साधन है । बच्चा-बूढ़ा-जवान सब कोई असानी से कर सकता है और साधन तो बड़े लम्बे साधनों के बाद योग क्रिया करके नीचे 7 चक्रों को तय करो, ऊपर आ कर फिर उस ध्वनि को पकड़ो । अरे यह साधन बच्चा-बूढ़ा-जवान सब कोई कर सकता है । बड़ी भारी concession (रियायत) है । अगले ज़मानों में तो

लोग बरसों गुरु के चरणों में रहते थे। आज कौन रह सकता है? फिर कहीं कुछ डालते थे। अब पहले देना पड़ता है और कहते हैं भई जीवन को साफ रखो। जितना घोर कलयुग है उतनी ज्यादा दया है, कोई जीव बच जाए। जी।

सदा मुक्त रहे इक रंगी नाहिं किसे नाल काहा हे ॥

वह right understanding (सही नजरी) को पा चुका है। और विवेक से काम लेता है, हमेशा एक रंग में रहता है। ये passing phases (उतार चढ़ाव) या ripples on the surface of the ocean (ज्वार-भाटा से प्रभावित नहीं होता) सदा एक रस रहता है। वह कार्य करता हुआ भी निष्कर्म है। कर्म योग क्या कहता है? जो कर्म करते हुए निष्कर्म रहे। निष्कर्म क्या होगा? जब तक देखने वाला न बने निष्कर्म नहीं होगा? “सो निहर्मी जो शब्द विचारे।” जब देखे कि वह (प्रभु) कर रहा है, तभी निष्कर्मी होगा। ज़बानी बेशक कहो मैं निष्कर्मी हूँ, बीच में होने का ख्याल है, मैं कर रहा हूँ। “नाहीं किसे नाल काहा हे।” किसी से कोई लड़ाई झगड़ा नहीं। जी।

बिन सत्युर सेवे घोर अंधारा, बिन शब्दे कोई न पावे पारा ।

कि जब तक गुरु नहीं मिलता घोर अंधकार है। सौ साधन करो अंधेरा ही अंधेरा है। शब्द में प्रकाश है, शब्द में ध्वनि है। यह नहीं होगा तो प्रकाश कैसे होगा? सत्युर के मिलने से, “सत्युर प्रसाद।” वह प्रसाद देता है, वरना घोर अंधकार रहेगा। जब तक उस के साथ जोड़ नहीं होगा, आना-जाना रहेगा। “बिन शब्दे पार न पावे कोई।” “जो शब्दे राते महाबैरागी, सो सच शब्दे लाहा हे।”

उस सच्चे शब्द के साथ लगने का profit (लाभ) क्या है, लाहा? वह करते हुए हमेशा बैरागी है। No attachment (कोई बंधन नहीं), उसकी बेड़ी (नाव) पानी में है, मगर उसकी बेड़ी में पानी नहीं। He is in the world, yet out of it (वह दुनिया में फंसा नहीं)। वह देखता है कोई और पॉवर flowing pen of God (प्रभु के हुक्म की कलम) जो है, उस के मुताबिक कर्म, जन्म-मरण, गरीबी-अमीरी सब होती है। He is in conscious contact with that Power (वह हर वक्त उस ताकत से जुड़ा हुआ है) इसलिये वह एक रस है। उस के मरते भी हैं, पैदा भी होते हैं। न पैदा होने की खुशी है न मरने का गम। कोई जाता है तो कहता है जाओ भई। यह किसकी बरकत है? सच्चे शब्द या सच्चा नाम पॉवर के साथ लगने से

बे अख्यार (बरबस) अपने आप ये चीज़ हासिल होती है। “सुणिये सर्व गुणाँ के गाह।” वह सारे गुणों का खजाना बन जाता है। He is the abode of all virtues. जी।

दुख-सुख कर्ते धुर लिख पाया, दूजा भाव आप वरताया ॥

कि हमारे कर्मों के अनुसार flowing pen of God (प्रभु की कलम) चलती है। “कर्मों वहे कलम।” उसके मुताबिक दुख भी है, पैदा भी होता है, मरता भी है, नुकसान भी होता है, profit (लाभ) भी होता है। ज़िन्दगी और मौत उसी पर मुनहसर (निर्भर) है, जो उसने कानून बनाया है। जिस मुल्क में पैदा किया, उसका कानून बना दिया। उस पर चलना पड़ेगा। मैं अमेरिका में जाऊं तो वहां के कानून के मुताबिक रहना पड़ेगा कि नहीं? जो इण्डिया में आते हैं तो इण्डिया के कानून के मुताबिक रहना पड़ेगा। जो धरती में आया है, यहां का कानून है, As you sow so shall you reap (जैसे बोवोगे वैसा काटोगे)। बस। यही कानून है। जी।

गुरुमुख होवे सो अलिप्तो वरते, मनमुख का क्या वसाहा हे ॥

कहते हैं जो गुरुमुख बनेगा - गुरुमुख किस को कहते हैं? “जो गुर सेती सन्मुख हो।” गुरु किसको कहते हैं? Word made flesh (जो शब्द सदेह है)। “गुर मैं आप समोये शब्द बरताया।” वह शब्द सदेह है, शब्द से जोड़ता है। उस का नतीजा क्या होता है? “गुरुमुख होवे सो अलिप्त वरते,” वह उस प्रभु से जुड़ता है, दुनिया में रहते हुए अलिप्त रहता है। जो मन-इन्द्रियों के घाट की भक्ति है वह गिरता है माफ करना। हम तो रोज़ गिरते हैं। किसी का क्या बयान करें, ऋषियों-मुनियों का जिक्र आता है वह भी कभी-कभी सारी उम्र मैं गिरे। हम तो रोज़ गिरते हैं, कदम-कदम पर। जो मन-इन्द्रियों में रहेगा वह गिरेगा। जो आग सुहागे के नीचे दब जाएगी प्रज्वलित होगी अंधेरी चलने पर। जो उस पर पानी डाला जाए? तो ये गुरुमुख की कहानी है। गुरु अर्जन साहब थे। एक बार उन के पास एक सिख (शिष्य) आ गया। हमारे हजूर भी, कभी-कभी किसी आदमी को भेज देना (मेरे पास) जाओ भई आठ-दस दिन उस के पास रह आओ। भेज दिया गुजरात (गुरु अर्जन साहब ने)। वहां उस आदमी को लिख दिया कि यह तुम्हारे पास आ रहा है, कुछ दिन ठहरेगा। तो वह मुर्दे का सामान तैयार कर रहा था, पूछा कि महाराज इसका क्या करेगे? कि कभी काम आएगा। कुछ दिनों के बाद उस की लड़की की शादी की बारात आने

लगी । बरात चढ़ी गयी । बरात वापस आई तो रस्ते में लड़का मर गया । मुर्दा लाकर रखा । वह सामान रख कर बैठे गये । कहने लगा, महाराज आप को जब ये पता था तो शादी क्यों की ? कि ये कर्मों का लेना-देना है । न वह सामान बनाते हुए उदास था, न बरात चढ़ते हुए ज़मीन से उसके पांव उखड़ते थे, न वापस आते हुए दुख था । कौन ? गुरुमुख जो था । वह खुशी से विदा करता है, जाओ भई । ये कौन कर सकता है ? गुरुमुख जो बने mouthpiece of Guru बने । Guru is the mouthpiece of God (गुरु प्रभु का मुख है) । जो उस के वचनों पर मत्था टेकता है उस की अवश्य कल्याण है । पर ऐसा गुरु भागों से मिलता है । अब तारीफ करते हैं मनमुख की । जी ।

सो मनमुख जो शब्द न पछाए । गुरु के भय की सार जाए ॥

गुरुमुख की तारीफ तो की । मनमुख कौन हुआ ? जिसको परिपूर्ण परमात्मा का अनुभव नहीं हुआ, और गुरु की बड़ाई का रोब (भय) उसके दिल में नहीं बैठा, माफ करना । गुरु को जान लो तो बाकी रह क्या गया ? वह गुरु समझायेगा, प्यार से समझायेगा, फिर समझायेगा । अपना बच्चा जो हुआ । गंदगी में लिथड़ भी जाए तो मार तो नहीं देता । मगर उसकी मनमुखताई इस में है कि वह उस की सार नहीं जानता, उस का न ही हुक्म मानता है न आज्ञा पर चलता है । उस का कारण ? कि शब्द के साथ जुड़ा नहीं । जुड़े, लगातार जुड़े, सारे गुण अपने आप आ जायेंगे । नम्रता भी आ जाएगी । हरके गुण आ जाएगा “सुनिये सरब गुणं के गाह ॥” Abode of virtues (गुणों की खान) बन जाए ।

भय बिन क्यों निरभौ सच पाइये, जम काढ लयेगा साहा है ॥

जब तक गुरु को हाज़र-नाज़र (सर्वव्यापक) नहीं समझते, कि वो हमारी हर action (कर्म) को देख रहा है, प्रभु कहाँ ? हम कहते हैं गुरु कौन देखता है ? जो जी में आए करो । झूठ बोलता है गुरु के सामने, नहीं मैंने यह नहीं किया । अगर गुरु को सचमुच गुरु समझ लिया जाए-गुरु पावर है, शब्द गुरु है, जिस में मुजस्सम (सदेह) है (वह शब्द) उस की हम कद्र करते हैं । पर वह कभी नहीं कहता मैं गुरु हूँ । वह कहता है गुरु वह है जो मेरे में काम करता है । उस के सामने जा कर भी हम कहते हैं, महाराज ! ऐसे नहीं ऐसे करो । जी ।

अफरियो जम मारेया न जाई, गुर के शब्दे नेड़ न आई ॥ अपहृति । अपहृति
शबद सुणे तां दूरों भागे, मत मारे हरजू बेपरवाहा है ॥ अपहृति । अपहृति

कहते हैं यमराज बड़ा ज़बरदस्त है, किसी तरह से वह काबू आ नहीं सकता । मगर जो गुरु का शब्द मिला है, जो contact (मेल) मिला है शब्द का गुरु द्वारा, वहां वह नजदीक नहीं आ सकता । “गुरु के शब्दे नेड़ न आई । शबद सुने तां दूरों भागे, मत मारे हरजू बेपरवाहा है ।” ये शब्द पावर की महिमा है । वह (यमराज) उसी का बनाया हुआ है । आगे सवाल आएगा, क्यों प्रभु ने बनाया ? अपने काम के लिये बनाया है । यह देखा गया है कि जिस सत्संगी को नाम मिला हुआ है, उसके अन्तर में नाम प्रगट है, वह किसी मरते आदमी के किनारे बैठे जिस को नाम नहीं मिला, वहां यमराज नहीं आता जब तक वह उठ न जाए । बड़ी भारी बरकत (प्रताप) है । जी ।

हरजू की है सब सरकारा, एह जम क्या करे बिचारा ॥

आप कहेंगे यमराज इतना ज़बरदस्त है ? कहते हैं, नहीं । प्रभु ने बनाया है । कहते हैं किन के लिए ? जो कुर्कर्म करें उनको सज्जा देने के लिए । नेक कर्म वालों को नेकी देने के लिये, बद वालों को बदी देने के लिये । उस की झ्यूटी है । वह जिन के पास नाम है, उन से भी डरता है । He is appointed by the Lord. जज जो मुकर्फ है, वो कहता है, In view of the facts before me I order you should be hanged until you are dead. (कि जो तथ्य मेरे सामने हैं उन को देख मैं तुम्हें फांसी का हुक्म देता हूँ) । वह क्या करे ? जी ।

हुक्मी बंदा हुक्म कमावे, हुक्मी कड़दा साहा हे ॥

वह हुक्म का बंधा हुआ काम करता है । जिन का कर्मों का सिलसिला खत्म होता है, उस को सज्जा- जज्जा देता है । जो देखने वाला बन जाए उसके नजदीक नहीं आता । ये बड़ी भारी बरकत है । बताओ किसी गुरु का मिलना कितने भागों से होता है ? और अगर हम नाम लेकर उस की कमाई नहीं करते तो कितने भागों से हीन हैं । और फिर एक और बात है । जिस को नाम मिला है वह यमों के हवाले नहीं होता । कितनी बड़ी बात है ? Concession (रियायत) है । “धर्मराय दर कागद फाड़े नानक सब लेखा समझा ।” मिसल (कर्मों की) transfer हो जाती है (काल के हाथ

से बदल कर गुरु के हाथ आ जाती है)। तो नाम का मिलना कितने भागों से होता है । इस लिये कबीर साहब ने कहा, “कबीर निगुरा न मिले पापी मिलें हजार ।” हज़ारों पापी मिलें कोई बात नहीं । नाम से पापों का नाश होता है, इसी लिये importance (महानता) दी है इस बात को । नाम जिस को मिल गया वह बड़े भागों वाला है । उस की कमाई करे, जहां जाना है अब चला जाए । मौत का भय न रहे । दोनों हाथ लड्डू हैं । आता हुआ रोता आता है, जाता हुआ हंसता जाए । अब गुरुसुख की तारीफ करने लगे हैं ।

गुरमुख साचे किया अकारा, गुरमुख पसरेया सब पसारा ।

कहते हैं ये गुरु का, प्रभु का सब अकारा (आकार, रचना) है, इस जिस्म में भी और सारे संसार में भी, ये सब उसी का आकार है, उसी का पसारा है, गुरु का । गुरु कौन ? शब्द गुरु । गुरु नानक साहब से पूछा गया तेरा गुरु कौन है ? कहते हैं शब्द गुरु । Word या शब्द गुरु है । जिसमें Manifest (प्रगट) है, उसके साथ जोड़ता है । जी ।

गुरमुख होवे सो सच बूझे, शब्दे सच्चे गुरु लाहा हे ॥

किसी अनुभवी पुरुष के सन्मुख बैठे, उसको समझ आती है शब्द क्या चीज़ है, नाम क्या चीज़ है, प्रभु क्या चीज़ है, कहां है, कैसे मिलता है ? उसको कुछ experience (अनुभव) मिलता है । जो गुरुमुख न बने ? जी ।

गुरमुख जाता कर्म विधाता, जुग चारे गुर शबद पछाता ॥

वह कर्मों का विधाता बन जाता है, चारों युगों में शब्द की महिमा गाता है । In the beginning was the Word, Word was with God, Word was God. (शुरू में शब्द था, शब्द परमात्मा के साथ था, शब्द ही परमात्मा था) यह सारी Creation (सृष्टि) उसके बाद बनी । चारों युगों में वही गुरु रहा, एक ही । जो गुरु कहते हैं हम गुरु हैं, वह गुरु नहीं । गुरु कभी नहीं कहता मैं गुरु हूं, मैं परमात्मा हूं । वह देखता है वह (परमात्मा) कर रहा है । अगर थोड़ा नशे में आकर कह दे, “मन खुदायम, मन खुदायम” (मैं परमात्मा, मैं परमात्मा) तो आखिर कतरे और समुद्र का क्या मुकाबला । एक सूरज की किरण आकर चमकी - Beware the light is not darkened. (खबरदार रहो रोशनी पर सियाही का पर्दा न फिर जाए) । वह किरण

आते हैं, वह घबराता नहीं। जिस्म के टूटने पर भी वह साबत है। वह रोज तोड़ता है (अर्थात् जीते-जी मरता है)। There is no sting of death for him. (मौत उसके लिये हौवा नहीं)। क्राईस्ट ने कहा, Ye take cross daily (तुम रोज़ सूली पर चढ़ो)। “सूली ऊपर सेज पिया की किस बिधि मिलण होय।” ये सूली है ना (जिस्म) चढ़ो। चढ़ो तो उससे मिलो ना। जो नीचे बैठे हैं, इन्द्रियों के घाट पर, कैसे उससे मिल सकते हैं? ये मीराबाई कहती है। “सौ सियाने एको मत।” ज़बानदानी अपनी, तरजेबयान (वर्णन शैली) अपना, बात वही कहते हैं। जो इस राज का जानने वाला है, वह तुमको थोड़ा Experience (अनुभव) देगा। उसको दिनों-दिन बढ़ाओ, तुम वही बन सकते हो जो तुमको देता है। हरेक पिता चाहता है मेरा बच्चा मुझसे भी लायक हो कि नहीं? पर कौन बनेगा? जो आज्ञा का पालन करे। जी।

गुरुमुख होवे सो नाम बूझे, काटे दुरमत फाहा है ॥

कहते हैं जो गुरुमुख है वही जान सकता है नाम क्या चीज़ है। “नाम नाम सबको कहे, कहिये नाम न होय।” सारा जहान कहता है, नाम जपो, नाम जपो। नाम जपना किसको कहते हैं? गुरुमुख होवे तो पता लगता है नाम जपना क्या है? “नाम जपत कोट सूर उजियारा।” और, “राम नाम कीर्तन।” वह देखने वाला बन जाता है। बाकी गुरु जिनको नहीं मिला वह राम राम हज़ारों करेंगे, सिर भी मारेंगे, ये भी करेंगे, वो भी करेंगे, नाचें-टापें, वो जानने वाले नहीं नाम के। जी।

गुरमुख उपजे साच समावे, न मर जम्मे ना जूनी पावे ॥

जो गुरुमुख बन गया वह हमेशा ही चढ़ती कला में रहता है, चौबीस घंटे। लेना-देना खत्म करता है, आओ भई उसको दो, अपने घर जाओ। वह जाग उठता है। इस भूल-भुलइया के बाज़ार में वह देख रहा है बात क्या है।

गुरमुख भक्ति सोहे दरबारे, सच्ची बाणी शबद संवारे ॥

कहते हैं गुरुमुख भक्ति जो है वह प्रभु के दर पर परवान है, क्योंकि वो प्रभु के रंग में संवारे जाते हैं, अन्तर में Manifest (प्रगट) होता है (शब्द) उस रंग में रहते हैं। उसने हकीकत को पा लिया, उसका Angle of vision (दृष्टिकोण) बदल चुका है। जी।

अनदिन गावे दिन राती, सहज सेती घर जाहा हे ॥

दिन रात उसी के प्यार में रहता है। उसी के गुण गाता है और अपने घर वापस चला जाता है। यहां भी उसके गुणानुवाद गाता है, जाते हुए उसमें समा जाता है। जी।

सतगुरु पूरा शब्द सुणाये, अनदिन भक्ति करो लिव लाए ॥

कहते हैं ये शब्द जिसकी महिमा गाई गई है, ये कोई पूरा सतगुरु ही सुना सकता है। दिन रात उस शब्द की महिमा में लग जाता है। पूरा सतगुरु होगा वही उसको सुनाएगा। “अखण्ड कीर्तन तिन भोजन चूरा, कहो नानक जिन सतगुरु पूरा।” बाहर का कीर्तन, बाहर का शब्द, गाना-बजाना, बहुत कुछ होता है। ये शब्द कहां से शुरू होता है? “पंजे तत्त उलंधेयां,” भाई गुरदास कहते हैं कि पांचों तत्वों से ऊपर आओ तो ये प्रकट होता है। जैसे-जैसे ऊपर आओ और ज्यादा प्रकट होता है। “एवड ऊंचा होवे कोय, तिस ऊंचे को जाने सोय।” जी।

हर गुर गावे सद ही निर्मल गुण फिर गाहा हे ॥

गुरु साहब कहते हैं, मैं उसका नाम लेकर बिगस (प्रफुल्लित हो) रहा हूं। बसन्त बन रही है, खिल रही है। ये उसकी कृपा है। “जिस गुरु दयाल तिस सदा बसन्त।” जिसको गुरु दयाल हो उसको सदा का बसन्त मिल जाता है। तो ये शब्द गुरु अमरदास जी का था, आज सुबह के सत्संग की Continuation में (उससे सम्बद्ध)। आपको सुबह सब साधनों का ज़िक्र किया गया। आखिर जिस नतीजे पर पहुंचे, उसका आगे ज्यादा विस्तार किया गया है। कल सुबह, कल शाम Continuation (इसी सिलसिले) में सत्संग होगा ताकि थोड़ी-थोड़ी सब Theory (सिद्धांत) आ जाए, वो आपके सामने रखी जाएगी, जो Basic (मूलभूत) तालीम सब महापुरुषों की रही है।

◆ ♦ ♦ ◆

गुरु की गुण असाधनीय है। उसकी गुणता विश्व की गुणता है।